Today's Poem – 28.05-2014

गृहस्थ व्यव्हार में रहते ऐसा बनो ट्रस्टी

किसी भी चीज़ में न रहे आसक्ति

तुम यहाँ आए हो भक्ति का लेने फल

बाप को याद करना हर पल

सतयुगी राजाई संगम पर बाप की श्रीमत से स्थापन होती

ऐसी श्रीमत मिलती है जो 21 पीढ़ी तक चलती

बेहद बाप से पढ़ाई पढ़कर स्वयं को कौड़ी से हीरे जैसा बनाना

पवित्रता का मार्ग अपनाना

अभी है हमारा यह सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल

अपने भाग्य को ना भूल

सदा दिल से गीत गाना

पाना था सो पा लिया

नम्बरवन में आना है

तो सिर्फ़ ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखते चलना है

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!